संख्या के आधार पर समाचारपत्रों में प्रकाशित साहित्य के उद्देश्य व प्रकाशित साहित्य की विधा

Sankhya Ke Adhaar Par Samachar Patron Me Prakashit Sahitya Ke Uddeshya Va Prakashit Sahitya Ki Vidha

Shiksha Kaushik[1] Dr. Ishwar Singh[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Meghalaya

[2]Rtd. Associate Professor, Govt. P.G. College, Narnaul

.....♦.....

परिचय

साहित्य का संप्रेषण समाज तक अनेक माध्यमों से होता है यथा पुस्तक, सम्मेलन, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि। किन्तु पत्रकारिता को साहित्य–संप्रेषण का सशक्त माध्यम माना जा सकता है। साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने में पत्रकारों की भूमिका महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। सम्मेलन, आकाशवाणी व दूरदर्शन की उपलब्धता सीमित क्षेत्र में होने से तथा पुस्तकों की बढ़ती कीमतों को देखते हुए समाचार–पत्र ही एक मात्र ऐसा माध्यम है, जो समय–समय पर आम जन तक साहित्य पहुंचा सके तथा उनमें साहित्य के प्रति रूचि भी जागृत कर सके। जब तक प्रत्येक व्यक्ति मानवता के निर्माण में संलग्न न हो समाज के पूर्ण परिवर्तन की कल्पना नहीं की जा सकती और इस मानवता की अलख जगाने में साहित्य व समाचार–पत्रों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। सम्भवतः इन्हीं तथ्यों ने शोधार्थी को प्रस्तुत शोध हेतु प्रेरित किया शोध में साहित्य व पत्रकारिता दोनों को अध्ययन का आधार माना गया है। अतः क्रमानुसार पत्रकारिता, साहित्य व दोनों के परस्पर सम्बन्धों पर दृष्टि डालना इस शोध में स्वाभाविक जान पड़ता है।

पत्रकारिता आज सर्वाधिक प्रचलित व लोकप्रिय विधा है। यह दैनिक जीवन और मानव जिज्ञासा की सूत्रधार है। रोटी, कपड़ा व मकान के समान ही पत्रकारिता भी सामान्य शिक्षित वर्ग के लिए आवश्यक बन गई है। मूलरूप से पत्रकारिता का सम्बन्ध समाचार–पत्र से है। सामान्यतः पत्र का आशय चिट्ठी से होता है। जिस प्रकार चिट्ठी में हम घर और आस–पास के समाचार प्रस्तुत करते हैं। वैसे ही समाचार–पत्र में देश विदेश की खबरें छपती हैं।[1] अंग्रेजी का न्यूज शब्द भी समाचार की व्यापकता की ओर संकेत करता है। न्यूज का शाब्दिक अर्थ उत्तर, पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण दिशाओं की खबरों से है।[2] फारसी में समाचार को खबर कहते हैं। खबर की जमा (बहुवचन) अखबार है। जिस कागज में बहुत सी खबरें होती हैं, उसे अखबार कहते हैं।[3] समाचार–पत्र की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि किसी दिन यदि समाचार–पत्र न पढ़ने को मिले तो व्याकुलता का अनुभव होता है।[4]

साहित्य का अवलोकन

पत्रकारिता के बारे में साहित्यकारों, पत्रकारों और विद्वानों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किए हैं। इसमें पत्रकारिता सम्बन्धी दृष्टिकोण और अवधारणा का परिचय भी मिलता है और उसका स्वरूप भी स्पष्ट होता है।

रामचन्द्र तिवारी के विचार में समग्र रूपेण पत्रकारिता एक व्यवसाय है और राष्ट्रीय चेतना को उद्दीप्त करने का सशक्त साधन है।[5]

सी.जी. मुलर का कथन है–"सामयिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है, जिसमें तथ्यों की प्राप्ति, उसका मूल्यांकन एवं ठीक–ठीक प्रस्तुतीकरण होता है।"[6]

प्रेमनाथ चतुर्वेदी के अनुसार "पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिस्थितियों में तथ्यों को अमूर्त व परोक्ष मूल्यों के संदर्भ में उपस्थित करती है।[7]

श्री विष्णुदत्त शुक्ल मानते हैं कि पत्रकारिता का काम बड़ा ही टेढ़ा है। उसमें प्रवेश करने से पहले खूब सोच समझ लेना चाहिए।[8]

महादेवी वर्मा ने कहा है–" पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बिना समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और

कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए।

कार्यशैलि तथा सामग्री

सारणी 1 – संख्या के आधार पर समाचारपत्रों में प्रकाशित साहित्य के उद्देश्य

समाचार–पत्र	ज्ञानवर्धक	मनोरंजक	उपदे"ात्मक	कुल
दैनिक भास्कर	17	11	97	125
दैनिक जागरण	57	0	11	68
दैनिक ट्रिब्यून	70	19	84	173
अमर उजाला	86	7	68	161
नवभारत टाइम्स	3	0	46	49
जनसत्ता	19	9	42	70

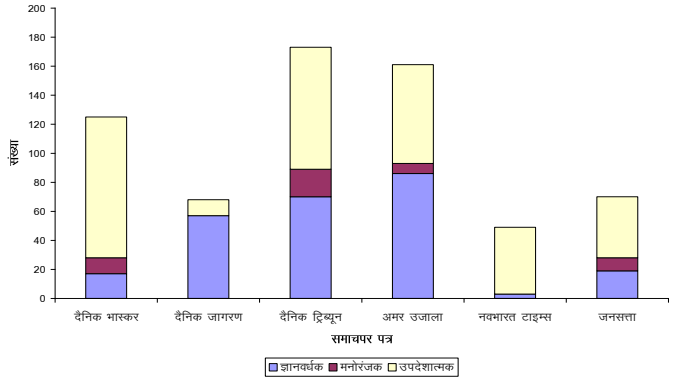

सारणी के अनुसार दैनिक भास्कर में 17 की सख्या में ज्ञानवर्धक, 11 मनोंरजक व 97 की संख्या में उपदे ात्मक साहित्य–सामग्री का प्रका ान हुआ। दैनिक जागरण में 57 ज्ञानवर्धक 11 उपदे ात्मक साहित्य–सामग्री ज्ञात हुई। दैनिक ट्रिब्यून में 70 ज्ञानवर्धक 19 मनोरंजक व 84 की संख्या में उपदे ात्मक साहित्य–सामग्री प्रकाशित हुई। अमर उजाला में 86 ज्ञानवर्धक, 7 मनोरंजक व 68 उपदे ात्मक साहित्य–सामग्री प्राप्त हुई। नवभारत टाईम्स में 3 ज्ञानवर्धक व 46 उपदे ात्मक साहित्य–सामग्री प्रकाशित हुई। जनसत्ता में 19 ज्ञानवर्धक, 9 मनोरंजक व 42 की संख्या में उपदे ात्मक साहित्य–सामग्री का प्रका ान हुआ।

सारणी से स्पश्ट है कि ज्ञानवर्धक साहित्य सर्वाधिक अमर उजाला ने 86 की संख्या में मनोंरजक साहित्य सर्वाधिक 19 दैनिक ट्रिब्यून ने, तथा उपदे ात्मक साहित्य दैनिक भास्कर ने सर्वाधिक 97 की संख्या में प्रकाशित किया। यह भी उल्लेखनीय है कि दैनिक जागरण व नवभारत टाइम्स में मनोरजक साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ।

सारणी 2 – प्रतिशत के आधार पर समाचारपत्रों में प्रकाशित साहित्य के उद्देश्य

समाचार–पत्र	ज्ञानवर्धक	मनोरंजक	उपदे"ात्मक	कुल
दैनिक भास्कर	13.6	8.8	77.6	100
दैनिक जागरण	83.6	.....	16.4	100
दैनिक ट्रिब्यून	40.4	11.20	48.4	100
अमर उजाला	53.18	4.62	42.20	100
नवभारत टाइम्स	5.8	.....	94.2	100
जनसत्ता	27.15	12.85	60.0	100

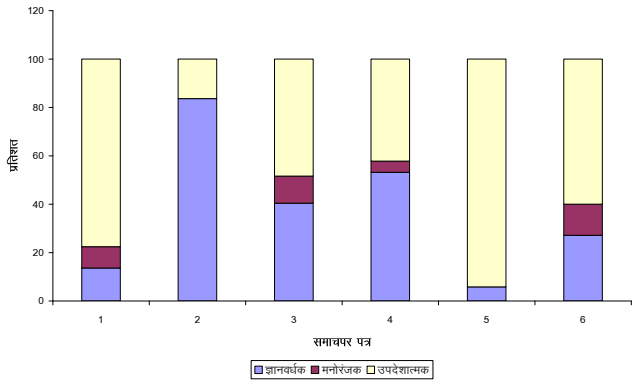

प्रस्तुत तालिका के अनुसार समाचार–पत्रों में प्रकाशित साहित्य–सामग्री के उद्देश्य का विश्लेशण किया गया। इसमें ज्ञान वर्धक एवं सूचनात्मक साहित्य को प्रथम वर्ग में, मनोरंजक साहित्य को द्वितीय वर्ग में, प्रेरणात्मक व उपदेशात्मक साहित्य को तृतीय वर्ग में रखा गया। तालिका के अनुसार दैनिक भास्कर में 13.6 प्रतिशत ज्ञानवर्धक एवं सूचनात्मक साहित्य, 8.8 प्रतिशत, मनोरंजक साहित्य, 77.6 प्रतिशत उपदेशात्मक तथा प्रेरणात्मक साहित्य का प्रकाशन हुआ। दैनिक जागरण में 83.6 प्रतिशत ज्ञानवर्धक एवं सूचनात्मक साहित्य तथा 16.4 प्रतिशत उपदेशात्मक साहित्य प्रकाशित हुआ। मनोरंजक साहित्य का इस समाचार–पत्र में सर्वथा अभाव रहा। दैनिक ट्रिब्यून में प्रकाशित कुल साहित्य का 40.4 प्रतिशत ज्ञानवर्धक, 11.2 प्रतिशत मनोरंजक व 48.4 प्रतिशत उपदे ात्मक साहित्य रहा। अमर उजाला में प्रकाशित साहित्य–सामग्री में 53.18 प्रतिशत सूचनात्मक साहित्य, 4.62 प्रतिशत मनोरंजक साहित्य व 42.20 प्रतिशत उपदेशात्मक साहित्य की भागीदारी रही। नव भारत टाइम्स से प्राप्त तथ्य भी जागरण के समान मनोरंजक रहित रहे। इसमें 5.8 प्रतिशत ज्ञानवर्धक व 94.2 प्रतिशत उपदे ात्मक साहित्य प्रकाशित हुआ। जनसत्ता में प्रकाशित साहित्य पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि इसमें प्रकाशित साहित्य में 27.15 प्रतिशत ज्ञानवर्धक, 12.85 प्रतिशत मनोरंजक व 60 प्रतिशत उपदेशात्मक साहित्य रहा।

प्रस्तुत सारणी व्यक्त करती है कि दैनिक जागरण ज्ञानवर्धक साहित्य अधिक (83.6 प्रतिशत) प्रकाशित करता है। जनसत्ता में मनोरंजक साहित्य का प्रका ान अधिक (12.85 प्रतिशत) होता है। और नवभारत टाईम्स में उपदे ात्मक साहित्य अधिक (94.2 प्रतिशत) प्रकाशित होता है। न्यूनता की दृश्टि से नव भारत टाईम्स में ज्ञानवर्धक साहित्य कम (5.8 प्रतिशत) प्रकाशित होता है। दैनिक जागरण एवं नवभारत टाईम्स में मनोरंजक

साहित्य का सर्वथा आभाव है जबकि उपदे ात्मक साहित्य सबसे कम (16.4 प्रतिशत) दैनिक जागरण में प्रकाशित होता है। औसत दृश्टि से कहा जा सकता है कि वर्तमान में समाचार–पत्रों में उपदे ात्मक साहित्य अधिक प्रकाशित होता है उसके प चात ज्ञानवर्धक साहित्य को रखा जा सकता है किन्तु मनोरंजक साहित्य सबसे कम देखने को मिलता है।

सारणी 3 – संख्या के आधार पर समाचारपत्रों में प्रकाशित साहित्य की विधा

समाचार–पत्र	दैनिक भास्कर	दैनिक जागरण	दैनिक ट्रिब्यून	अमर उजाला	नवभारत टाइम्स	जनसत्ता
कहानी	22	11	60	23	..	..
कविता	4	11	6	19	..	1
उपन्यास	..	..	..	..	..	..
संस्मरण	8	14	13	1	12	20
गजल	..	..	..	..	..	..
नज्म	..	..	..	..	..	..
निबन्ध	..	..	..	..	..	..
नाटक	..	..	..	..	..	..
एकांकी	..	..	..	..	..	..
आत्मकथा	..	..	..	..	..	..
जीवनी	..	6	..	2	..	1
रेखाचित्र	..	..	..	..	..	..
लेख	60	26	39	51	24	38
व्यंग्य	24	..	8	59	..	7
लघु कथा	6	..	33	..	13	..
रिपोतार्ज	1	..	13	6	..	1

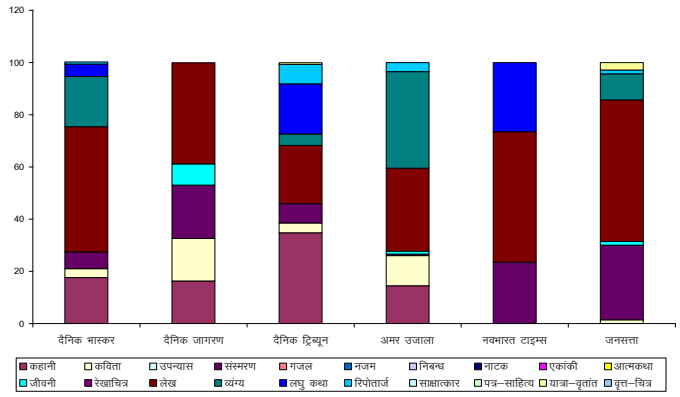

प्रस्तुत सारणी के अनुसार दैनिक भास्कर में 22 कहानी, 4 कविता, 8 सस्मरण, 60 लेख, 24 व्यंग्य, 6 लघु कथा तथा 1 की संख्या में रिपोर्ताज का प्रका ान हुआ। दैनिक जागरण में 11 कहानी, 11 कविता, 14 सस्मरण, 6 जीवनी तथा 26 लेख प्रकाशित हुए। दैनिक ट्रिब्यून में 60 कहानी, 6 कविता, 13 सस्मरण, 39 लेख, 8 व्यंग्य, 33 लघु कथा, 13 रिपोतार्ज तथा 1 यात्रा वृतांत प्रकाशित हुए। अमर उजाला मे 23 कहानी, 19 कविता, 1 सस्मरण, 2 जीवनी, 51 लेख, 59 व्यंग्य, 6 रिपोतार्ज के रूप में कुल 161 साहित्य–सामग्री का प्रका ान किया। नवभारत टाइम्स में 12 सस्मरण, 24 लेख, तथा 13 लघु कथाएं प्रकाशित हुई। जनसत्ता ने 1 कविता, 20 सस्मरण, 1 जीवनी, 38 लेख, 7 व्यंग्य, 1 रिपोतार्ज तथा 2 यात्रा वृतांत का प्रका ान किया।

सारणी संकेत करती है कि दैनिक ट्रिब्यून ने कहानी सर्वाधिक 60 की संख्या में प्रकाशित की है। अमर उजाला कविता–प्रका ान के क्षेत्र में 19 की संख्या के साथ प्रथम स्थान पर है। संस्मरण जनसत्ता ने सर्वाधिक 20 की संख्या में दिए है। जीवनी 6 संख्या के साथ दैनिक जागरण ने सर्वाधिक प्रकाशित की है। लेख प्रका ान में 60 संख्या के साथ दैनिक भास्कर प्रथम स्थान पर है। व्यंग्य का प्रका ान 59 संख्या के रूप में अमर उजाला ने सर्वाधिक किया है। लघु कथा प्रका ान में दैनिक ट्रिब्यून प्रथम स्थान पर है, जिसमें 33 लघु कथाएं प्रकाशित हुई हैं। रिपोतार्ज में भी 13 की संख्या के साथ दैनिक ट्रिब्यून ही प्रथम स्थान पर है। यात्रा–वृतांत सर्वाधिक जनसत्ता ने 2 की संख्या में प्रकाशित किए हैं।

सारणी 4 – प्रतिशत के आधार पर समाचारपत्रों में प्रकाशित साहित्य की विधा

समाचार–पत्र	दैनिक भास्कर	दैनिक जागरण	दैनिक ट्रिब्यून	अमर उजाला	नवभारत टाइम्स	जनसत्ता
कहानी	17.4	16.3	34.78	14.45	..	..
कविता	3.4	16.3	3.75	11.56	..	1.43
उपन्यास	..	..	..	..	..	..
संस्मरण	6.4	20.47	7.45	0.57	23.53	28.58
ग़ज़ल	..	..	..	..	..	..
नज्म	..	..	..	..	..	..
निबन्ध	..	..	..	..	..	..
नाटक	..	..	..	..	..	..
एकांकी	..	..	..	..	..	..
आत्मकथा	..	..	..	..	..	..
जीवनी	..	8.16	..	1.15	..	1.43
रेखाचित्र	..	..	..	..	..	..
लेख	48	38.77	22.36	31.79	50	54.28
व्यंग्य	19.2	..	4.34	36.99	..	10.00
लघु कथा	4.8	..	19.25	..	26.47	..
रिपोतार्ज	0.8	..	7.45	3.49	..	1.43
सक्षात्कार	..	..	..	..	..	..
पत्र–साहित्य	..	..	..	..	..	..
यात्रा–वृतांत	..	..	0.62	..	..	2.85
वृत्त–चित्र	..	..	..	..	..	..
कुल	100	100	100	100	100	100

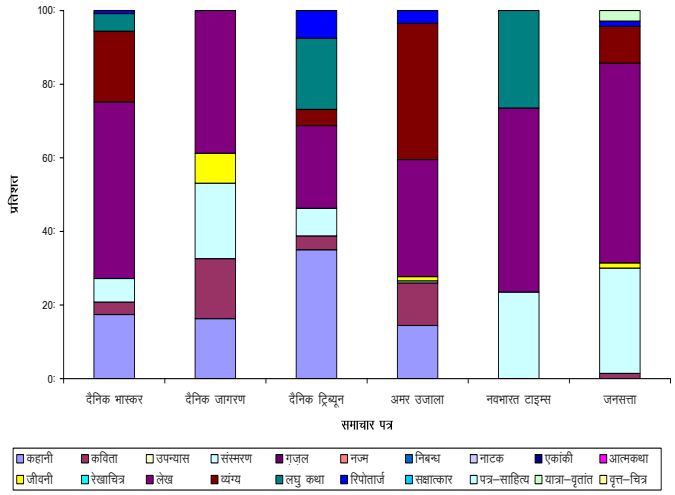

समाचार–पत्रों के साहित्यिक अंतर्वस्तु विश्लेशण में उद्देश्य के पश्चात् विधा सम्बन्धी तथ्यों को जानने का यत्न किया गया। पूर्व में सभी सम्भावित विधाओं, कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, ग़ज़ल, नज्म, निबन्ध, नाटक, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, लेख, (समीक्षा, आलोचना), व्यंग्य, लघु कथा, रिपोतार्ज, साक्षात्कार, पत्र–साहित्य, यात्रा–वृतांत व वृत–चित्र को भाोध हेतु भाामिल किया गया, किन्तु प्राप्त तथ्यों के अनुसार प्रकाशित साहित्य–सामग्री में पर्याप्त विविधता देखने को नही मिली। पूर्व नियत कुल 20 विधाओ में से मात्र 9 विधाओं का प्रका ान हुआ। प्रकाशित साहित्य–सामग्री में कहानी, कविता, संस्मरण, जीवनी, लेख (समीक्षा आलोचना), व्यंग्य, लघु कथा, रिपोतार्ज साक्षात्कार व यात्रा वृतांत विधा ही देखने को मिली। (उल्लेखनीय है कि प्रसंग, समीक्षा व आलोचना को लेख विधा में ही शामिल किया गया है।) ज्ञात तथ्यों के अनुसार उपन्यास, ग़ज़ल, नज्म, निबन्ध, नाटक, एकांकी, आत्मकथा, रेखा–चित्र, साक्षात्कार, पत्र–साहित्य एवं वृत–चित्र विधा कहीं देखने को भी नहीं मिली।

सारणी द ार्ाती है कि दैनिक भास्कर में कविता (3.4 प्रतिशत), कहानी (17.4 प्रतिशत), संस्मरण (6.4 प्रतिशत), लेख (48 प्रतिशत), व्यंग्य (19.2 प्रतिशत), लघुकथा (4.8 प्रतिशत) व रिपोर्ताज (0.8 प्रतिशत) के रूप में कुल सात विधाओं का प्रका ान होता है जिसमें लेख सर्वाधिक (48 प्रतिशत) व रिपोर्ताज सबसे कम (0.8 प्रतिशत) प्रकाशित होते हैं। दैनिक जागरण में कुल पॉच विधाओं का प्रका ान होता है जिसमें कहानी (16.3 प्रतिशत), कविता (16.3 प्रतिशत), संस्मरण (20.47 प्रतिशत), जीवनी (8.16 प्रतिशत) व लेख (38.77 प्रतिशत) को भाामिल किया जा सकता है। इस में लेख सर्वाधिक (38.77 प्रतिशत) संख्या में तथा जीवनी सबसे कम (8.16 प्रतिशत) प्रकाशित होती है।

विश्लेशण

दैनिक ट्रिब्यून में कुल आठ विधाओं का प्रकाशन होता है जिसमें कहानी 34.78 प्रतिशत, कविता 3.75 प्रतिशत, संस्मरण 7.45 प्रतिशत, लेख 22.36 प्रतिशत, व्यंग्य 4.34 प्रतिशत, लघु कथा 19.25 प्रतिशत, रिपार्ताज 7.45 प्रतिशत व यात्रा वृतांत 0.62 प्रतिशत प्रकाशित होता है। दैनिक ट्रिब्यून में कहानी विधा का प्रका ान सबसे अधिक अर्थात 34.78 प्रतिशत होता है, जबकि यात्रा वृतांत का सबसे कम 0.62 प्रतिशत। सारणी के अनुसार यदि अमर उजाला पर दृश्टि डालें तो ज्ञात होता है कि इसमें कविता 11.56 प्रतिशत, कहानी 14.45 प्रतिशत, संस्मरण 0.57 प्रतिशत, जीवनी 0.15 प्रतिशत, लेख 31.79 प्रतिशत, व्यंग्य 36.99 प्रतिशत व रिपोर्ताज 3.49 प्रतिशत के रूप में कुल सात साहित्यिक विधाओं का प्रका ान होता है। जिसमें व्यंग्य विधा का प्रका ान सर्वाधिक अर्थात 36.99 एवं संस्मरण का सबसे कम अर्थात 0.57 प्रतिशत प्रकाशित है। विधा की दृश्टि से नवभारत टाईम्स मात्र तीन विधाओं का प्रका ान करने वाला समाचार–पत्र है। इसमें संस्मरण 23.53 प्रतिशत, लेख 50 प्रतिशत व लघुकथा 26.47 प्रतिशत का ही प्रका ान हुआ। लेख का सर्वाधिक 50 प्रतिशत एवं संस्मरण का सबसे कम 23.5 प्रतिशत है। तथ्य द ार्ाते हैं कि जनसत्ता में कुल सात विधाओं का प्रका ान होता है जिसमें कविता 1.43 प्रतिशत, संस्मरण 28. 58 प्रतिशत, जीवनी 1.43 प्रतिशत, लेख 54.28 प्रतिशत, व्यंग्य 10 प्रतिशत, रिपोर्ताज 1.43 प्रतिशत व यात्रा वृतांत 2.85 प्रतिशत को भाामिल किया जा सकता है। जनसत्ता में लेख का प्रका ान अधिक 54.28 प्रतिशत होता है जबकि कविता व रिपोर्ताज सबसे कम क्रम ाः 1.43 व 1.43 प्रतिशत प्रकाशित होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. तिवारी रामचन्द्र, पत्रकारिता के विविध रूप, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1980।

2. कुमार जोगेन्द्र, हिन्दी पत्रकारिता की दिशाएं, सुरेन्द्र कुमार एण्ड सन्स, शाहदरा, दिल्ली, 2004।

3. गोदरे विनोद, हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

4. डॉ. ठाकुर दत्त शर्मा आलोक, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000।

5. पंकज विष्णु, हिन्दी पत्रकारिता का सुबोध इतिहास, रचना प्रकाशन, दिल्ली, 2002।

6. डॉ. माणिक, समाचार–पत्रों की भाषा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1999।

7. पारिख जावरी मल्ल, जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली, 2001।

8. पंतजलि प्रेमचन्द, मीडिया के पचास वर्ष, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997।

9. डॉ. नगेन्द्र, विचार और विश्लेषण, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

10. डॉ. हंस कृष्ण लाल, समीक्षा शास्त्र, ग्रंथम राम बाग, कानपुर।

11. डॉ. द्विवेवी सूर्य नारायण, भारतीय समीक्षा सिद्धान्त, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

12. राय गुलाब, साहित्य और समीक्षा, प्रतिभा प्रकाशन मंदिर, दिल्ली।

13. राय गुलाब, साहित्य और समीक्षा, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा।

14. चौहान शिवदान सिंह, साहित्यानुशीलन, आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1955।

15. डॉ. दीक्षित भागीरथ, समीक्षा लोक, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।

16. डॉ. शर्मा ओमप्रकाश, आलोचना के सिद्धान्त, पदम बुक कम्पनी, जयपुर।

17. रजवार इन्द्र चन्द्र, पत्रकारिता : सिद्धान्त और व्यवहार, जनाप्रकाशन, दिल्ली।

18. किशोर राज, पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

19. पंत नवीन चन्द्र, पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, कनिष्का पब्लिशर्ज, दिल्ली।

20. डॉ. हरिमोहन, समाचार फीचर लेखन और सम्पादन कला, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।

21. गोस्वामी प्रेम चन्द, पत्रकारिता के प्रतिमान, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।

22. पंत एन.सी., जोशी मनोज, कुमार जितेन्द्र, हिन्दी पत्रकारिता की रूपरेखा, कनिष्का पब्लिशर्ज, नई दिल्ली, 1995।

23. पंत एन.सी., संपादन कला, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

24. तिवारी अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता और भावनात्मक एकता, नमन प्रकाशन नई दिल्ली, 1999।

25. तिवारी नित्यानन्द, आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

26. कुमार जैनेन्द्र, साहित्य और संस्कृति, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली।

27. डॉ. त्रिवेदी आर.एन., डॉ. शुक्ला आर.पी., रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कालेज बुक डिपो, दिल्ली।

28. डॉ. रामअवतार, हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।

29. मिश्र कृष्ण बिहारी, हिन्दी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1968।

30. डॉ. राघवन वी., भारतीय काव्य सिद्धान्त, प्रकाशन, ईलाहाबाद।

31. टेकचन्द, खन्ना वेदपाल, आदर्शालोचन, राज पब्लिशर्ज, नई सड़क, नई दिल्ली, 1960।

32. दास श्यामसुन्दर, साहित्योलोचन, इंडियन प्रैस लिमिटेड, प्रयाग, 1942।

33. हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य

34. हरिचरण, हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, माया प्रकाशन मन्दिर, जयपुर।

35. डॉ. शर्मा वासुदेव, हिन्दी साहित्य का विकास, सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली।

36. कांग कुलबीर सिंह, पूर्वी समीक्षा के सिद्धान्त, बिशनचंद एण्ड सन्स, दिल्ली।

37. डॉ. त्रिपाठी रामसागर, डॉ. मिश्र श्याम, पौरस्त्य एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन दिल्ली।

38. डॉ. त्रिपाठी रामसागर, डॉ. मिश्र श्याम, समीक्षा शास्त्र के भारतीय मानदण्ड, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

39. डॉ. जैन निर्मला, प्लेटों के काव्य सिद्धान्त, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1966।

40. डॉ. नगेन्द्र, पाश्चात्य काव्य शास्त्र की परम्परा, हिन्दी विभाग दिल्ली।

41. शर्मा डॉ. शिव कुमार, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियां, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1990।

42. द्विवेदी हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (1982)